पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

नेपाली लोक-संस्कृति की एक झलक

लक्ष्मी प्रसाद शर्मा

लोक का अर्थ जनसामान्य से है, जो विस्तृत रूप से इस पृथ्वी पर फैले हुए हैं। सामान्य अर्थ में शिक्षित समुदाय से भिन्न मानव समुदाय को लोक की संज्ञा दी जाती है। संस्कृति शब्द से तात्पर्य धर्म , दर्शन ,साहित्य और कला इत्यादि से लगा सकते हैं। जीवन जीने की कला से इसका सम्बन्ध होता है। लोक संस्कृति का वास्तविक अर्थ लोक व्यवहार से लगाया जाता है। लोक और संस्कृति एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं ,लोक संस्कृति लोक की संपदा होती है।

सिक्किम की लोक संस्कृति को जानने से पूर्व सिक्किम के समाज और लोक को जानना आवश्यक है। यहाँ की अधिकांश जनजातियों का अस्तित्व धर्म से केन्द्रित है। गौतम बुद्ध, राम-कृष्ण, 33 कोटि देवी-देवता, प्रकृति, वन, पहाड़, नदी, मन्दिर, गुम्पा ये ही इनकी आस्था के केन्द्र बिंदु हैं। जन्म-संस्कार से लेकर मृत्यु पर्यन्त संस्कारों में विविधता देखने को मिलती है। धीरे-धीरे सिक्किमवासियों के मध्य अपनी जाति तथा भाषा-साहित्य के प्रति सचेतनता आई है। सिक्किम में नेपाली समुदाय के अन्तर्गत छेत्री, बाउन, राई, लिम्बू, कामी, दमई, प्रधान, नेवार, गुरुङ्ग, सार्की, थामी थापा, मगर, सन्यासी, माझी आदि आते हैं। सिक्किम में जातीय विविधता के कारण संस्कार, संस्कृति, परम्परागत मान्यताओं में विविधता देखने को मिलती है। नेपाली समाज में लिम्बू, राई, तामङ, नेवारी जातियों की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति मजबूत दिखाई पड़ती है। यद्यपि नेपाली मातृभाषा और व्यवहार की भाषा है, किंतु नेपाली जाति और उसके अंतर्गत अनेक उपजातियों में जो विविधता देखने को मिलती है वह अपने में अनुपम है। उनकी अपनी भाषिक विशेषता के साथ उनकी अपनी संस्कृति और उनका अपना वैशिष्ट्य है। नेपाली गोर्खाली संस्कृति में मौजूद ये विविध रंग और आभा उसको बहुत गरिमामय बना देते हैं। सिक्किम की समृद्ध नेपाली संस्कृति में मारुनी, संगिनी, बालन, असारे च्याब्रूङ-धान-नाच, राई नृत्य, गुरुङ नृत्य ,तामाङसेलो आदि पारम्परिक लोक नृत्यों का महत्त्व बहुत अधिक है। सांस्कृतिक नृत्यों में इनके द्वारा दौरा सुराल, पटुकी, गुनिउ-चोली, सिर में सिरबन्दी, कान में चेप्टे सून (स्वर्ण का बना आभूषण, जो चपटा होता है) स्त्री द्वारा धारण किये जाते हैं। कटी में हेमबरी, पाउजो

या कल्ली पारम्परिक वेष-भूषा के विविध प्रकार हैं। इनके द्वारा विविध प्रकार के वाद्य-यंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है जिनमें मादल, मर्‌चुंगा, बिनायो, सारंगी, बाँसुरी-मुरली, दमाहा, सनाई, जन्ते-बाजा आदि प्रमुख हैं। शादी में दमाई जाति द्वारा इन वाद्य-यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, जिसके ताल में सम्मिलित भीड़ बड़ा आनंद लेती है। च्याब्रूङ, जो ढोल जैसा होता है, लिम्बू जाति के लोग इसका प्रयोग करते हैं, मृत्यु-संस्कार तथा विवाह-संस्कार में इसी वाद्ययन्त्र का प्रयोग अलग-अलग ढंग से किया जाता है। डम्फू तामङ जाति का पारम्परिक वाद्ययन्त्र है। तामंग जाति के लिए डम्फू बहुत ही महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यह उनकी जातीयता का प्रतीक माना जाता है। उपर्युक्त सभी वाद्य-यंत्र सिक्किम की नेपाली गोर्खाली समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस आलेख में नेपाली जाति के अंतर्गत आने वाली छेत्री(ब्राह्मण) बाउन समुदाय के सांस्कृतिक नृत्य बालन तथा संगिनी पर चर्चा करेंगे।

बालन नृत्यनाटिका :

सिक्किम के खस समुदाय में प्रचलित यह एक पारम्परिक धार्मिक नृत्यगाथा है। इसमें रामायण एवं महाभारत की कथाओं का प्रदर्शन होता है। नृत्य, अभिनय तथा लयात्मक संवाद के साथ इसे पुरुषों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यह लोक नृत्यनाटिका है, जिसे किसी धार्मिक अनुष्ठान, गृहप्रवेश व विवाह, व्रत-वंदना आदि संस्कारों के विशेष अवसर पर अथवा शुक्लपक्ष की रात्रि में आयोजित करने की परम्परा है।[1]

सिक्किम की छेत्री बाउन (ब्राह्मण) जाति में इस धार्मिक नृत्य को आस्था का केंद्रबिंदु माना जाता है। मान्यता यह है कि शादी के बाद किसी के यहाँ परिस्थितिवश सन्तान नहीं होती या बाँझ की स्थिति बनती है तो घर में विशेष धार्मिक अनुष्ठान किया जाता है और इसी विशेष अवसर पर धार्मिक नृत्य प्रस्तुत किया जाता है। बालन नृत्य की टोली वयस्क ब्राह्मण-छेत्री समाज में निमंत्रण के पश्चात् तैयार होती है। उनका विशेष सम्मान होता है। इस टोली में 2-2, 4-4, 8-8 जोड़े होते हैं। इसमें एक सदस्य हनुमान का किरदार निभाता है एवं एक टोली का नायक होता है, जिसे खलीफा कहा जाता है। ये विशेष पारम्परिक पोशाक दौरा-सुराल, कुर्ता पायजामा, हेम्बरी, सिर पर फेंटा अर्थात् पगड़ी पहने हुए घर के प्रांगण में निकलते हैं। सर्वप्रथम यह टोली अपने इष्टदेव, कुलदेवता आदि को स्मरण करती है, फिर आरती होती है तथा घर का मुखिया टोली के सभी सदस्यों को दही और अक्षत का टीका लगाता है। मंगलाचरण से प्रारम्भ होकर रामायण, महाभारत, कृष्णचरित्र के विशेष प्रसंग को इस अभिनय में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मनोरंजन के लिए हनुमान का किरदार बड़ा प्रासंगिक होता है, जो रावण के उपवन को उजाड़ता है। कभी-कभी अभिनेता उस चरित्र में इतना ढल जाता है कि वह साक्षात् हनुमान की भांति विध्वंस करता हुआ नजर

आता है, यद्यपि हनुमान के लिए फल-फूल की व्यवस्था पहले से ही यज्ञस्थल में की जाती है। यह धार्मिक नृत्य शुक्लपक्ष की रात्रि में और किसी धार्मिक अनुष्ठान के अवसर पर आयोजित होता है, जो मनोरंजन-पूर्ण तो है ही, साथ ही छेत्री-बाउन संस्कृति और परम्परा का अभिन्न अंग भी है।

बालन नृत्य के प्रारम्भ में की जाने वाली आरती इस प्रकार है-

अथः राम भरत रामायण ॐ राम राम राम
आरतीको जय राजा रामजीको जय
हरिहर भक्ति गरौं प्रभु दर्शन देउ
आरतीको जय राजा रामजी को जय।।

संक्षिप्त-

प्रथम आरती राम पुष्प को माला.. आरतीको जय राजा रामजी की जय।।
दोसरो आरती राम देवरजीको नन्दन... आरतीको जय राजा रामजी की जय।।
तेसरो आरती राम त्रिभुवन-चारी.. आरतीको जय राजा रामजी की जय।।
चौथामा आरती राम चँवरजीको पूजा.. आरतीको जय राजा रामजी को जय।।
पंचम आरती राम मंगलध्वनि गाँउछौं.. आरतीको जय राजा रामजी को जय।।

ऐसे ही दशम आरती तक लम्बी आरती की श्रृंखला है।

फिर बालन नृत्य प्रारम्भ किया जाता है। एक और उदहारण दृष्टव्य है -

हो..हो..हो..
उठो हो रे कंठ मुखल रे दन्त जिह्वैर माता।
सरस्वती माई शुभ है बचन बोल
घटघट ज्ञान कुन प्रभु देलान, देलान है कुन नाथ।
घटघट ज्ञान सरस्वती देलिन,देलान है हो नवैनाथ।[2]

गीत के बोल में हिंदी शब्दों की भरमार देखने को मिलती है, परन्तु विद्वान इसे बदलने की स्थिति में नहीं रहते, उनका तर्क होता है कि इनको निकाल देने से लय और ताल के साथ गीत में उत्पन्न मिठास खत्म हो जाएगी।

2.संगिनी :

संगिनी नेपाली संस्कृति और परम्परा का अभिन्न अंग है, परन्तु इस नृत्य का आयोजन किसी पर्व तथा पूजा की समाप्ति के अवसर पर किया जाता है। इसे धार्मिक नृत्य नहीं कहा जा सकता। यह एक गायन-नृत्य है। इस गीत में देवताओं का वर्णन पंचतंत्र की कथा तथा व्यावहारिक जीवन को माध्यम बनाकर अभिनयात्मक रूप में व्यक्त किया जाता है। यह भी पारम्परिक नृत्य-गायन कला से सम्बद्ध है। बालन में पुरुष पात्र ही होते हैं तथा संगिनी नृत्य में स्त्री-पात्र नृत्य करती हैं अर्थात् बालन पुरुषों का नृत्य है तो संगिनी स्त्रीजाति से संबंधित है। संगिनी शब्द स्त्रीलिंग शब्द है। इसका शाब्दिक अर्थ पत्नी, साथिन, साथ रहनेवाली अर्थात् सहेली है। प्राचीन काल में आज की तरह संगीत एवं वाद्ययंत्रों की सुविधा नहीं होती थी। पहाड़ी स्त्रियाँ अपनी सहेली के साथ घास काटते, लकड़ी बीनते,

चक्की चलाते जो गीत गाया करती थीं उसे संगिनी कहते हैं। विशेषकर स्त्री विवाह के बाद किसी पराए घर में जाती है और उसे मायके की याद सताती है,उस पर सास-ससुर का डांटना-फटकारना और प्रताड़ना हो, तो स्वाभाविक है कि वह घर की याद कर भावुक होती है। इन्हीं भावुक क्षणों को वह काम करते अपनी सहेलियों के साथ अपने मन का भाव साझा करती है और अपने अनुभव को लयात्मक ढंग से पिरोती है, इसी लयात्मक गीत को संगिनी कहा जाता है। खस समुदाय में हरितालिका अर्थात् तीज पर्व का विशेष महत्व है। इस दिन विवाहिता सभी स्त्रियाँ अपने मायके बुलाई जाती हैं। हरितालिका के दिन गाँव की सभी स्त्रियाँ इकट्ठे होती हैं और ऐसे ही संगिनी गीतों के माध्यम से नृत्य करती हैं। विवाह, अनुष्ठान, व्रत-त्योहार के अवसर पर भी छेत्री बाउन समुदाय की स्त्रियों द्वारा पारम्परिक वेशभूषा पहनकर पानी से भरे कलश को सिर पर उठाए संगिनी गीत गाते-गाते नाचने की परम्परा है। इन संगिनी गीतों में विशेषतः रामायण, महाभारत, कृष्णचरित्र पर आधारित गाथाओं को लयात्मक तरीके से गाने की प्रथा है। हरितालिका के अवसर पर महाद्वीप विसर्जन के समय गाये जाने वाले गीत का एक उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है -

दीप र ज्योति रुँगीमा रुँगी
यो रातै बितायौ हे हरि !
यो रातै बितायौ....[3]

कृष्णचरित्र के प्रसंग में जब अक्रूर मामा कंस का न्योता लेकर मथुरा से ब्रज आते हैं उसी प्रसंग को गीत में ढाला गया है -

कृष्ण

कंशेस्वर मामाले होम जग्गे थाले..

जोर-जारै सुपारी है आयो म जान्छु निम्तोमा...

यशोदा माँ

भला र मतिको त्यो निम्तो होइन...

न जाऊ बालै निम्तोमा नानी

न जाऊ निम्तोमा[4]

इसका भावार्थ यह है कि- कृष्ण माँ यशोदा से कहते हैं कि कंस मामा के यहाँ विशाल यज्ञ का आयोजन हो रहा है, हमें विशेष न्यौता आया है , जाना होगा। माँ यशोदा कृष्ण को सचेत करते हुए कहती हैं- इस न्यौते का उद्देश्य सही नहीं है, अतः तुम वहां मत जाओ। इसी तरह रामायण, महाभारत, कृष्णचरित्र तथा अपने व्यावहारिक जीवन के मार्मिक अनुभवों को गायन-नृत्य में पिरोया जाता है।

आज की पीढ़ी यद्यपि आधुनिक संगीत संसार में रमी हुई है, परन्तु बालन नृत्य और संगिनी गीत आज भी पहले की तरह ही प्रासंगिक हैं। ये लोकसंस्कृति में आज भी स्पंदित हैं । वर्तमान परिदृश्य में संगिनी को समय के अनुरूप परिष्कृत,

परिमार्जित किया गया है और यह आज भी खस संस्कृति का अभिन्न अंग है।

संदर्भ-सूची :

1. नेपाली लोकसाहित्य,लेखक-प्रा.डॉ.चूडामणि बन्धु,शिर्षक बालन,पृ-278

2. कवि अविचन्द्र सिग्देल की पुस्तक-हाम्रो संस्कृति र परम्परा बालन संग्रह-पृष्ठ-1-2-4 श्लोक संख्या-2

3. नेपाली लोक साहित्य,चूड़ामणि बन्धु,शि-संगिनी-पृष्ठ-137

संपर्क-सूत्र:

सह प्राध्यापक, हिंदी विभाग
सरकारी संस्कृत महाविद्यालय, साम्दोंग, पूर्व सिक्किम